साध्वीरत्न पुष्पवती अभिनन्दन ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०१२०२४)

मुख्य टाइटल
समर्पण सुमन
आशीर्वचन
शुभकामनाएँ
प्रकाशक के बोल
आदिवचन
सम्पादकीय
क्याँ कहाँ
प्रथम खण्ड – सन्देश-शुभकामनाएँ-अभिनन्दन -- १-१३६
आशीर्वचन ---२
विकास की कहानी, गुरु की जबानी -- ४
चमकता सूरज दमकता जीवन --- ६
गुणों की खान -- ६
महासती श्री पुष्पावतीजी की साधना का क्रमिक विकास -- ७
पट्ठइं वरेज्ज तुट्ठिं ---८
प्रबल प्रतिभा की धनी --- ९
तप और त्याग की जीती जागती प्रतिमा -- ११
एक बहुमुखी व्यक्तित्व का अभइनन्दन ---१२
एक महकता पुष्प ---१३
अनन्त आस्था के सुमन --- १४
बहुमुखी प्रतिभा की धनी -- १६
एक तेजोमय व्यक्तित्व -- १६
युग-युग जीवे सती --- १७
मेरी जीवन सर्जक सद्गुरुणीजी ---१८
यह है पारदर्शी व्यक्तित्व --२१
गुणों के आगार -- २४
अन्तर साधना की एक सफल यात्री -- २६
बहुमुखी प्रतिभा-श्री पुष्पवतीजी -- २८
अभिनन्दन के बोल -- २८
विविधताओं का संगम -- २९
प्रज्ञा की ज्योतिर्मय मूर्ति ---३१
विराट् मनोवृत्ति की धनी --- ३३
सफलता का रहस्य -- ३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुभाशिषः -- ३५
श्रद्धा-स्निग्ध हृदय से अभइनन्दन -- ३७
चरणों में वन्दन -- ३७
परम ज्ञा साधिका -- ३८
कमल की तरह निर्लिप्त --- ३९
युग-युग जीवो मेरे गुरुणीजी -- ४०
शत-शत वन्दनः अभिनन्दन -- ४०
महासती पुष्पवतीजी एक प्रकाश स्तम्भ --- ४२
प्रबुद्ध समन्वय साधिका -- ४२
अन्त ह्ृदयका अभिनन्न -- ४७
आलोक स्तम्भ -- ४८
श्री पुष्प पच्चीसी -- ४९
स्वच्छमति है महासती -- ५१
भावों के सुमन --- ५२
बधाई गीत --- ५२
सम्मान सुमन -- ५४
शासन ज्योति -- ५५
मंगल एकादशी -- ५६
शत-शत सुमन -- ५७
पुष्प के चरणों में भाव पुष्प -- ५८
दो मुक्तक --- ५९
सहस्रजीवीं आप हों -- ६०
शत-शत वर्ष जीओ सतीजी -- ६०
सती शिरोमणि का अभिनन्दन -- ६१
हर्ष से मनाइये -- ६१
वन्दन अभिनन्दन -- ६१
श्रद्धा सुमन गीत --- ६२
श्रद्धा सुमन --- ६२
वन्दन अभिनन्दन स्वीकारो -- ६३
गुण-गान --- ६४
स्वर्ण जयन्ती मनावा हर्ष सु रे -- ६४
पुष्पवत्यष्टकम्-- ६५
वन्दना के इन स्वरों में एक स्वर.. -- ६७
जिन शासन की गरिमा --- ६८
बोलता हुआ भाष्य --- ६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दो कदम आगे ---------- ७०
सेवा का प्रेरक प्रतिबिम्ब ---------- ७१
वन्दनीया महासतीजी ---------- ७१
मैं दानव से मानव बना ---------- ७३
प्रेरक-संस्मरण ---------- ७४
एक संस्मरण ---------- ७६
शुभाकांक्षा ---------- ७८
साध्वी संघ की शोभा ---------- ७९
तत्त्वमसि, श्री पुष्पवती ---------- ८०
साधनारति महासती पुष्पवती ----------८१
एक महान् जीवन गौरव ---------- ८५
अध्ययन ज्योति ---------- ८६
जीवन का कायाकल्प ---------- ८७
हृदयोद्गार ---------- ८७
जैनधर्म की विभूति ---------- ८८
स्वर्णिम अवसर ---------- ८९
शत-शत तुम्हें प्रणाम ---------- ९०
हमारे कुल का नाम रोशन किया ---------- ९२
आध्यात्म साधना की सफल साधिका ---------- ९३
भावना के सुमन ---------- ९४
हम हैं खुश नसीब ---------- ९५
जन-जीवन की आधार ---------- ९५
सागरवर गम्भीरा ---------- ९६
जन जन का आकर्षण केन्द्र ---------- ९७
चुम्बकीय आकर्षण ---------- ९८
शासन प्रभाविका ---------- ९९
एक सुलझी हुई साधिका ---------- १०१
प्रेरक जीवन का दर्शन ---------- १०२
श्रद्धा के दो बोल ---------- १०३
मधुर व्यवहार ---------- १०४
मैं महासतीजी के गुणों पर मुग्ध हूँ ---------- १०५
तेजोमय व्यक्तित्व की धनी ---------- १०५
आराध्य के चरणों में ---------- १०६
एक महान तत्त्व दर्शी महासती ---------- १०७
योग्यता का अभिनन्दन ---------- १०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेरी सद्गुरुणी -- १०८
महासती की सफलता -- १०९
निर्मल मन की धनी -- १०९
यह महान् जीवन --- ११०
यथानाम तथागुण --- ११०
गुरुणीजी, मेरा शत-शत प्रणाम --- १११
शत-शत अभिनन्दन --११२
प्रकाश पुञ्ज ---११३
संकल्प के धनी --११३
प्रेरणा स्रोत -- ११४
विलक्षण व्यक्तित्व की धनी -- ११४
श्रद्धा सुमन --- ११६
ख्याता सर्वत्र लोकेस्मिन् --- ११७
हृदयोद्गाराः --- १२०
वन्दना के स्वर --- १२७
वन्दना के फूल --- १२९
महिमा मंडित मणि --- १३०
पुष्पाष्टक --- १३०
पुष्प-पराग ---१३१
गुरुणी-महिमा ---१३१
अभिनन्दन श्रद्धार्चना द्वादशी --- १३२
दुर्लभ है वह पथ -- १३३
गंगा की जब धार बनी --- १३४
महिमा छाई चारों ओर --- १३५
द्वितीय खण्ड – व्यक्तित्व दर्शन -- १३७-२०४
जैन शासन-प्रभाविका अमर साधिकाएँ एवं सद्गुरुणी परम्परा -------------------------------- १३७
एक बूँद, जो गंगा बन गई -- १६३
शिष्या-परिवार--- २०२
वर्षावास-सूची --- २०३
तृतीय खण्ड – कृतित्व दर्शन -- २०५-२५७
सृजनधर्मी प्रतिभा की धनी-महासती पुष्पवतीजी -- २०५
प्रेरणा का निर्झर-संस्मरण --- २१५
चिन्तन के सूत्र-जीवन की गहन अनुभूति--- २१९
स्फुट विचार --- २३४
आगम-सम्पादन -- २३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिंसा पंचकम् सत्य पचकम् -- २३९
महासती प्रभावती जी द्वारा प्रणीत साहित्य और उसका शास्त्रीय मूल्यांकन ------------------- २४१
साहस का सम्बल-समीक्षण --- २४७
साध्वीरत्न पुष्पवतीजी की प्रवचन शैली -- २४९
अमर साहिगा पुप्फवई -- २५७
चतुर्थ खण्ड – जैन दर्शन, इतिहास और साहित्य --- १-१८२
भारतीय दर्शनों में आत्म तत्त्व – डॉ. एम. पी. पटैरिया -- १
आगम साहित्य में पूजा शब्द का अर्थ – श्री दलसुख मालवणीया ----------------------------- २३
पुण्य-एक तात्त्विक विवेचन – डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री --- २७
जैन प्रमाणवाद का पुनर्मूल्यांकन – डॉ. संगमलाल पाण्डेय ----------------------------------- ३४
जैन वाक्य दर्शन – डॉ. सागरमल जैन --- ४०
जैन न्याय के अनुमान-विमर्श – डॉ. दरबारीलाल कोठिया ------------------------------------- ५२
आचार्य जिनसेन का दार्शनिक दृष्टिकोण – डॉ. उदयचन्द्र जैन -------------------------------- ७२
तत्त्वमसि वाक्य – डॉ. दामोदर शास्त्री -- ७९
तपः साधना और आज की जीवन्त समस्याओं के समाधान – राजीव प्रचण्डिया --------------- ९०
श्रमण आचार मीमांसा – डॉ. भागचन्द्र जैन -- ११०
कषाय-कौतुक और उससे मुक्ति – डॉ. महेन्द्रसागर प्रचण्डिया -------------------------------- १२०
प्रायश्चित्त-स्वरूप और विधि – डॉ. पुष्पलता जैन --- १३२
जैन सन्त और उनकी रचनाएँ – डॉ. तेजसिंह गौड़ --- १३२
भगवान महावीर एवं बुद्ध – डॉ. विजयकुमार जैन --- १४६
जैन भू-गोल विज्ञानम् – स्व. मुनि श्री अभयसागरो गणी ------------------------------------- १५०
धर्म और विज्ञान – साध्वी मंजूश्रीजी -- १५६
आर्ष ग्रन्थों में व्यवहृत पारिभाषिक – डॉ. आदित्य प्रचण्डिया -------------------------------- १६१
शब्दावलि और उसका अर्थ अभिप्राय अभाव प्रमाण-एक चिन्तन – रमेश मुनि शास्त्री --------- १७१
जैन विद्वानों के सन्दर्भ में सोमदेवसूरिकृत यशस्तिलक चम्पू में... – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन --- १८२
पंचम खण्ड – सांस्कृतिक सम्पदा --- १८९-२३६
धर्म और जीवन मूल्य – डॉ. महेन्द्र भानावत -- १८९
अहिंसा-वर्तमान सन्दर्भ में – श्री मदन मुनि -- १९३
प्राचीन जैन साहित्य में गणितीय शब्दावलि – डॉ. प्रेमसुमन जैन ------------------------------ १९९
जैन पर्व और उसकी सामाजिक उपयोगिता – कुंवर परितोष प्रचण्डिया ---------------------- २०५
राजस्थान के मध्यकालीन प्रभावक जैन आचार्य – श्री सौभाग्य मुनि -------------------------२११
आज के जीवन में अहिंसा का महत्त्व – डॉ. हुकमचन्द जैन ---------------------------------- २१८
जैन परम्परा में काशी – डॉ. सागरमल जैन --- २२२
ईर्यासमिति और पदयात्रा – संजीव प्रचण्डिया --- २२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन विचारधारा में शिक्षा – डॉ. शान्ता भानावत -- २३२
छठा खण्ड – नारी समाज के विकास में जैन साध्वियों का योगदान ----------------------- २३७-३००
नारी के मुक्ति दाता भगवान महावीर – डॉ. शान्ता भानावत ------------------------------- २३७
भारतीय संस्कृति और परम्परा में नारी – प्रो. कल्याणमल लोढ़ा ---------------------------- २४०
नारी का उदात्त रूप –एक दृष्टि – मुनि प्रकाशचन्द्र --------------------------------------- २४५
नारी जीवन जागरण – श्री सौभाग्यमल जैन-- २५५
ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रोत्थान की धुरी-नारी – डॉ. निर्मला एम. उपाध्याय --------------- २६०
नारी की भूमिका-विश्व शान्ति के सन्दर्भ में – डॉ. मालती जैन ------------------------------ २६५
विश्व शान्ति में नारी का योगदान – मुनि नेमिचन्द्रजी ------------------------------------- २७०
जैन नारी-समाज में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दावलि.... – डॉ. अलका प्रचण्डिया -------------------- २७६
मानवीय में नारी का स्थान – डॉ. इन्दिरा जोशी -- २८१
जैन शासन में नारी का महत्त्व – श्री रतनमुनिजी --- २८७
मन कहता हैं नारी को पूजा – निर्भय हाथरसी --- २९०
प्राचीन जैन कथाओं में विहार की जैन नारियाँ – डॉ. रंजन सूरिदेव ------------------------- २९३
नारी-प्रेरणा और शक्ति – साध्वी मधुबालाश्रीजी --- २९७
सातवाँ खण्ड – भारतीय संस्कृति में योग --- ३०१-३७६
कुण्डलिनीयोग-एक विश्लेषण – युवाचार्य महाप्रज्ञ -- ३०१
प्राणशक्ति कुण्डलिनी एवं चक्र साधना – डॉ. ब्रह्ममित्र अवस्थि ------------------------------ ३०८
कुण्डलिनीयोग-एक चिन्तन – डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी --- ३२२
भारतीय वाङ्मय में ध्यान-योग – डॉ. साध्वी प्रियदर्शनाश्रीजी ------------------------------- ३२९
नाम साधना का मनोवैज्ञानिक विवेचन – डॉ. ए. डी. बतरा -------------------------------- ३६०
योगश्चित्तवृत्तिनिरोध की जैन दर्शन सम्मत व्याख्या – राजकुमारी सिंघवी -------------------- ३६३
धर्म धयान-एक अनुचिन्तन – कन्हैयालाल लोढ़ा -- ३६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org